This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M742 विषय मंत्रविधी

नाव. गायत्री उत्कीलनम्

लेखक/लिपीकार —

पृष्ठ 2 काळ — पूर्ण/~~अपूर्ण~~

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥श्रीगणेशाय नमः॥ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य निग्रह
अनुग्रहकर्ता प्रजापतिर्ऋषिः॥ ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्ति
देवता॥ गायत्री छंदः॥ ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनि
योगः॥ ॐ सावित्रीं भजाम्यहं सुमुखीं निर्मलां॥ यत्सुखानि स
तोसि वेदगर्भः॥ गायत्री ब्रह्मपास्ति तद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः तां पश्यं
ति धीराः॥ सुमनसा वाचमग्रतः॥ ब्रह्मशापविमोचनाय कुरु स्वा
हा॥ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमंत्रस्य नूतन स
ष्टिकर्ता विश्वामित्रर्षिः॥ विश्वामित्रानुग्रहकर्त्री गायत्री देवता
कामदुघा शक्तिः॥ अनुष्टुप् छंदः॥ विश्वामित्रशापविमोचना
र्थे जपे विनियोगः॥ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां ॐ कपा पु

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

द्वा

स्वात्रिसत्तोसि वरेण्यगर्भः ॥ सावित्री रूपोसि तां रूपंत्रस्व मेदुस्तो
पसुंसि भीतः ॥ सुमनसा त्वं मम कृते ॥ विश्वामित्रशापविमोचन
द्विमुक्ता भव ॥ ॐ अस्य श्री वसिष्ठशापविमोचनमंत्रस्य निग्र
हानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिः ॥ वसिष्ठानुग्रहकर्त्री गायत्री देवता ॥
वा आत्मोद्भवा गायत्री छंदः ॥ वसिष्ठशापविमोचनार्थे ॥ ॐ सत्यब्रह्म
स्वनंतकर्मदायिने विष्णुसेविता ॥ जगत्प्रसूतिर मलैः पवित्रे त्रा
तेनमः ॥ तस्य दानि नागे यानि वसु धियं पः ॥ ब्रह्मा संती विष्णु रा
युधानि परारस्तोसौ परमं ॥ नारायणाय विद्महे वा
सुदेवाय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ मायामोहपाशां
ध्वंसो धाम्नो धाम्नो राजेंद्र तोरूणं ॥ ने मुंचं ॥ सदा मुरव्या इ

त्तिनरूणति शापान्महत्तनो वरूणनो मुंच ॥ ॐ अस्य श्री गोतम
शापविमोचनमंत्रस्य महामैत्रेय ऋषिः ॥ अव्यक्ताणाय धी
त्रीछंदः ॥ गोतमानुग्रहीता गायत्री शक्तिर्देवता ॥ गोतमशा
पविमोचनार्थे ॥ ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ दे
वां आसादयादिह ॥ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मस
म्मिते ॥ गायत्रीछंदसां माता ब्रह्मयोने नमोस्तु ते ॥ सप्तर्षि
नस्योम्बनी आनिरसोऽहं भगवती भगवती गायत्री तं गौ
तम शापाद्विमुक्ता भव ॥ ॐ चोलकीलनं ॥ पच प्रणव

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

संपुटं॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ह्रौं जुंसः भूः तत्सवितुर्वरेण्यं सः
जुंहौं सः भुवः भर्गोदेवस्यधीमहि सः जुंहौं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
सः जुंहौं सः भुवः भर्गो देवस्य धीमहि सः जुंहौं ॐ ॐ ॐ
ॐ ह्रौं जुंहौं सः स्वः धियोयोनः प्रचोदयात्॥ सः जुंहौं ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ भूर्भुवः स्वः परोरजसे सावदोम् [illegible] सः
जुंहौं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ सोहं भगवती गायत्री [illegible]
तावत्॥ उत्कीलनं॥ ९॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=16.08.19 14:29
,TRANSFERRED=2019/08/16 at 14:31:43
,PAGES=4
,TYPE=STD
,NAME=S0001479
,Book Name=M-742-GAYTRI UTKILANAM
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection